दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
मई – 2009
समय –10.00 बजे से 1.00 तक

दिनाँक :30–05–2009

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
एम.ए. द्वितीयवर्ष परीक्षा
विषय: हिन्दी, प्रश्न पत्र–6
शीर्षक :प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

समय – 3 घंटे

पूर्णांक : 75

सूचना : 1. खंड–क से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । *4x10=40*
2. खंड ख अनिवार्य है ।

खंड –क

1. पद्मावती समय के आधार पर चन्दबरदाई के काव्य–कला की विवेचना कीजिए ।
2. विद्यापति ने पदावली में भक्ति एवं श्रृंगार का सुंदर समन्वय किया है । सिद्ध कीजिए ।
3. कबीर भक्त कवि होने के साथ–साथ सच्चे समाज–सुधारक भी थे । सिद्ध कीजिए ।
4. नागमती वियोग खंड में वर्णित 'बारह मासा' का संक्षिप्त वर्णन कीजिए ।
5. भ्रमरगीत के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए ।
6. विनय पत्रिका के आधार पर तुलसी की भक्ति–भावना को स्पष्ट कीजिए ।
7. रीतिकलीन काव्य परंपरा में बिहारी का स्थान निर्धारित कीजिए ।

खंड ख

5x7=35

निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

प्रिय प्रथिराज नरेस जोग, लिषि कग्गर दिन्नौ ।
लगुन बरग रचि सरब, दि द्वादस ससि लिन्नौ ॥
सै अरु ग्यारह तीस साष संवत परमानह ।
जोवित्री कुल सुद्ध वरनि वर रष्हु प्रानह ॥

अथवा

कर पकर पीठ हय परि चढाय ।
लै चल्यौ नृपति दिल्ली सुराय ॥
भइ षवरि नगर बाहिर सुनाय ।
पद्मावतीय हरि लीय जाय ॥

हेरत–हेरत हे सखी,रहा कबीर हिराई ।
बूँद समानी समुंद मै,सो कत हेरी जाय ॥

हम घर जाल्या आपणां,लिया मुराडा हाथि ।
अब घर जालौं तास का,जे चले हामारे साथि ॥

अथवा

कबीर सूता क्या करे,जागि न जपै मुरारि ।
इक दिन सोवन होइगा,लंबे पाँव पसारि ॥

P.T.O.

जाका गुरु भी अंधला,चेला खरा निरंध ।
अंधे अंधे ठेलिया, दून्यू कूप पडंत ॥

(ग) भा भादो दूभर अति भारी, कैसे भरौं रैनि अंधियारी ॥
मंदिर सून पिउ अनतै बसा । सेज नागिनी फिरि फिर डसा ॥
रहौ अकेलि गहे एक पाटी । नैन पसारि मरऔं हिय फाटी ।
चमक बीजु, घन गरजि तरासा । बिरह काल जीउ गरसा ॥

अथवा

रोइ गँवाए बारह मासा । सहस सहस दुख एक एक साँसा ॥
तिल तिल बरखि बरखि परि जाई । पहर पहर जुग जुग न सेराई ॥
सो नहिं आवै रूप मुरारि । जासौ पाव सोहाग सुनारी ॥
साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा । कौन सो घरी करै पिउ फेरा ?

(घ) कौ ब्रज बाचत नाहिंन पाटी ।
कत लिखि लिखि पठवत नंदनंदन, कठिन बिरह की भाटी ॥
नयन, सजल कागद अति कोमल कर आँगुरी अति ताती ।
परसत जरें, बिलोकत भीजै, दुहूँ भाँति दुख छाती ॥
देखे जियहिं स्यामसुंदर के रहहिं चरन दिनराती ॥

अथवा

अति मलीन वृषभान कुमारी ।
हरि स्रमजल अंतर-तनु भीजे,ता लालच न धुवावत सारी ॥
अधोमुख रहति उरध नहिं चितवति,ज्यों गथ हारे थकित जुआरी ॥
छूटे चिहुर,बदन कुम्हिलाने,ज्यों नलिनी हिमकर की मारी ॥
हरि-संदेश सुनि सहज मृतक भई,इक बिरहिनि दूजे अलिजारी ॥

(च) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागर सोय ।
जा तन की झाँई परे, स्याम हरित दुति होय ॥

बतरस लालच लाल की,मुरली धरी लुकाय ।
सौंह करै, भौंहन हँसै, देन कहै,नटि जाय ॥

अथवा

कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय ।
वा खाए बौरात है, या पाए बौराय ॥

चिरजीवो जोरी जुरै, क्यों न सनेह गँभीर ।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर ॥

******